

श्री सत्यनारायण जी की आरती: जय लक्ष्मी रमणा

पद 1

जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा।
सत्यनारायण स्वामी, जन-पातक हरणा ॥

पद 2

रत्न जड़ित सिंहासन, अद्भुत छवि राजे।
नारद करत निराजन, घंटा ध्वनि बाजे ॥

पद 3

प्रगट भये कलि कारण, द्विज को दर्श दियो।
बूढ़ो ब्राह्मण बनकर, कंचन महल कियो ॥

पद 4

दुर्बल भील कठारो, इन पर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ एक राजा, जिनकी विपत्ति हरी ॥

पद 5

वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीनी।
सो फल भोग्यो प्रभुजी, फिर स्तुति कीनी ॥

पद 6

भाव भक्ति के कारण, छिन-छिन रूप धर्यो।
श्रद्धा धारण कीनी, तिनको काज सर्यो ॥

पद 7

ग्वाल बाल संग राजा, वन में भक्ति करी।
मनवांछित फल दीनो, दीनदयाल हरी ॥

पद 8

चढ़त प्रसाद सवायो, कदली फल मेवा।
धूप दीप तुलसी से, राजी सत्यदेवा ॥

पद 9

श्री सत्यनारायण जी की आरती, जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, मनवांछित फल पावे ॥